3. एस.वी. वर्णेकर

कविवर वर्णेकर का पूरा नाम श्रीधर भास्कर वर्णेकर है। इनका जन्म सन् 1918 ई. में नागपुर, महाराष्ट्र में हुआ था। इनकी समग्र शिक्षा-दीक्षा नागपुर में ही सम्पन्न हुई। ये नागपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए तथा पदोन्नति करते हुए बाद में विभागाध्यक्ष के पद पर भी आसीन हुए। संस्कृत व्याकरण, साहित्य और वेदान्त आपके रुचिकर विषय थे। इन्होंने संस्कृत की विविध विधाओं में लेखन के साथ "अर्वाचीन संस्कृत साहित्य" नाम से मराठी में शोध-प्रबन्ध लिखा। ये राष्ट्रशक्ति-मराठी, साहित्य, संस्कृत भवितव्यम् (साप्ताहिक) तथा योगप्रकाश, मराठी मासिक पत्र के सम्पादक भी रहे। इसके अतिरिक्त श्री वर्णेकर नागपुरस्थ भोसला वेदशास्त्र महाविद्यालय तथा नागपुर के योगाभ्यासि मण्डल के अध्यक्ष रहे। इनके द्वारा विरचित संस्कृत भाषा की विविध विधाओं की रचनाएँ इस प्रकार हैं–

(i) मन्दोर्मिमाला- (स्फुटकाव्यचतु:शती)।

(ii) महाभारत-कथा।

(iii) भारतरत्नशतकम्।

(iv) स्वातन्त्र्यवीरशतकम्।

(v) कालिदासरहस्यम् (शतककाव्य)।

(vi) रामकृष्णपरमहंसीयम् (शतककाव्य)।

(vii) वात्सल्यरसायनम् (शतककाव्य)।

(viii) अर्वाचीन संस्कृत साहित्य (डी.लिट्. शोध-प्रबन्ध)।

(ix) अभङ्ग-धर्मपद (धम्मपद का मराठी पद्यात्मक विवरण)।

(x) शिराज्योदयम्-महाकाव्य।

(xi) विवेकानन्दविजयम् (महानाटकम्)।

इनकी दो रचनाएँ अप्रकाशित हैं, जिनमें से एक परोक्षपाणिनीयम् हिन्दी प्रबन्ध काव्य है तथा दूसरा शिवराज्याभिषेकम् नाटक है। इसके अतिरिक्त 200 से अधिक शोध-निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। छत्रपति शिवाजी के गौरवमय चरित्र को आधार बनाकर श्री वर्णेकर ने 68 सर्गों में निबद्ध 'शिवराज्योदयम्' महाकाव्य की रचना की जो श्रीशिवराज्योदय शारदा गौरव ग्रन्थमाला, 424 सदाशिव पेठ, पूना से सन्

Scanned by CamScanner

1972 ई. में प्रकाशित है। इस महाकाव्य पर कवि को साहित्य-अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली से प्राप्त हुआ था। संस्कृत भाषा-साहित्य की निष्ठापूर्ण सेवा करते हुए श्रीवर्णेकर कवि का सन् 2000 ई. में देहावसान हो गया था। आधुनिक संस्कृत साहित्य के इतिहास में श्री वर्णेकर कवि की गाथा अमर पंक्तियों में निबद्ध है।

Scanned by CamScanner

4. श्रीपरमानन्दशास्त्री

कविवर शास्त्री का जन्म सन् 1926 ई. में उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले के अनवरपुर ग्राम में हुआ था। श्री शास्त्री जी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त किये हैं। "संस्कृत गीति-काव्य के विकास" विषय पर शोधकार्य में सफल कवि के लेखन एवं आलोचन के विषय रहे– हिन्दी कवि विहारी, प्राकृतकाव्य गाथा सप्तशती और धोयी कवि का पवनदूत। इन्होंने संस्कृत में अनेक लघुकाव्यों के अतिरिक्त दो महाकाव्यों की रचना की, जिनके नाम हैं– जनविजयम् और चीरहरणम्। इनमें जनविजयम् का प्रकाशन स्वयं कवि द्वारा 1978 में किया गया और चीरहरणम् को भी स्वयं कवि ने 1983 में प्रकाशित किया। कवि को उनके चीरहरणम् महाकाव्य पर–मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् ने 1985 में कालिदास पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

श्री शास्त्रीजी द्वारा विरचित द्वितीय महाकाव्य जनविजयम् में 15 सर्ग हैं। इसमें दिल्ली-वर्णन से आरम्भ करके स्वतन्त्रता के आगम, पं. जवाहरलाल नेहरू की नीति, चीन के साथ युद्ध, श्री लालबहादुर शास्त्री का प्रधान-मन्त्रित्व, पाक के साथ युद्ध, शास्त्री जी का निधन, इन्दिरागाँधी द्वारा सत्ता की प्राप्ति, उनका उत्कर्ष, बाङ्गलादेश की मुक्ति, आपातकाल की घोषणा, जनतादल का उद्भव, निर्वाचन, जनप्रतिनिधि के रूप में कवि द्वारा नेताओं का उद्बोधन आदि विषय मुख्य रूप से वर्णित हैं। कवि के कथनानुसार, षष्ठ लोकसभा के निर्वाचनों में आपातकाल के कारण उसके मन में एक अभूतपूर्व प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप यह महाकाव्य रचित हुआ है। इस महाकाव्य के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह परम्परा से अलग हटकर सम्पूर्ण आधुनिक भाव-भूमि पर रचित हुआ है, जिसमें राष्ट्रभावना को प्रतिष्ठित किया गया है। कवि के अनुसार ही यहाँ "जन" शब्द जनता-दल का वाचक नहीं है, अपितु भारतीय जन को समग्रता से संकेतित करता है। पन्द्रहवें सर्ग में कवि भारत की जनता का प्रतिनिधि बनकर सभी दलों के नेताओं को सचेत करता है और अनाचार के प्रति राजनीति के कलुष को कारण मानता हुआ उन पर रोष प्रकट करता है।

Scanned by CamScanner

कविवर श्री शास्त्रीजी ने 12 सर्गों में निबद्ध चीरहरणम् महाकाव्य में महाभारत की प्रसिद्ध कथा, द्रौपदी के चीरहरण को एक नये ढंग से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार कविवर शास्त्री ने निश्चित रूप से अपनी दोनों महाकृतियों द्वारा आधुनिक संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कथ्य, भाव और भाषा तीनों दृष्टियों से नये आयामों का उद्घाटन किया है।

Scanned by CamScanner

12. मूलशङ्कर मणिकलाल याज्ञिक

आधुनिक संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक नाटक रचनाकारों की परम्परा में श्रीमूलशंकर मणिकलाल याज्ञिक का नाम भी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। श्री याज्ञिक का जन्म 31 जनवरी सन् 1886 ई. में गुजरात प्रान्त के खेड़ा जनपद में स्थित नाडियाद गाँव में हुआ। नाडियाद गाँव नटपुर आनन्द गाँव के पास स्थित है। श्री याज्ञिक के पिताजी का नाम श्री मणिकलाल तथा माता का नाम अतिलक्ष्मी था। श्री याज्ञिक ब्राह्मण परिवार से थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नाडियाद गाँव में ही सम्पन्न हुई तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बड़ौदा गये। जब ये स्नातक में अध्ययनरत थे, उसी समय श्रीअरविन्द घोष उस महाविद्यालय में प्राचार्य थे। श्री याज्ञिक ने उन्हीं के संरक्षण में रहकर स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त श्रीयाज्ञिक ने पारिवारिक परिस्थितियों के चलते अध्ययन का परित्याग कर बैंक में नौकरी कर ली तथा वहीं पर विभिन्न पदों पर इन्होंने कार्य किया। सन् 1924 ई. में श्रीयाज्ञिक ने बैंक की नौकरी का परित्याग कर दिया तथा शिक्षणकार्य करने लगे। शिक्षणकार्य करते हुए श्रीयाज्ञिक जी की प्रतिभा प्रस्फुरित हुई और इन्होंने लेखनकार्य प्रारम्भ कर दिया। कुछ समयोपरान्त इनकी योग्यता से प्रभावित होकर बड़ौदा के शासक सयाजीराव ने अपने राजकीय संस्कृत कॉलेज, बड़ौदा में प्राचार्य के पद प्रतिष्ठित किया। इसी समय इन्होंने अपनी प्रशिक्षण एवं लेखनकला में अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त की तथा आपने व्याकरण, न्याय एवं साहित्य आदि समग्र संस्कृतशास्त्रों के ज्ञान से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया।

श्रीयाज्ञिक ने अपनी लेखनप्रतिभा से संस्कृतजगत् को उत्कृष्टतम् साहित्य प्रदान किया है। इनके नाटकों में जहाँ एक ओर गीतों का समावेश मिलता है, वहीं दूसरी ओर उनकी रचना विजयलहरी में उनकी संगीतमर्मज्ञता का बोध होता है। छत्रपतिसाम्राज्यम् नामक उनके नाटक में प्रयुक्त मल्लार, कर्णाट, भूपाली, विहाग एवं राग मालकोश उनकी संगीतमर्मज्ञता को प्रभावित करते हैं। श्री याज्ञिक ने राष्ट्रनिर्माता महापुरुषों के चरित्र का गहन अध्ययन एवं अनुसंधान कर ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। इन्होंने गुजराती भाषा में भी प्रभूत साहित्य की रचना की है क्योंकि गुजराती इनकी मूल भाषा थी। श्रीयाज्ञिक द्वारा विरचित कतिपय मुख्य

रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

(i) विजयलहरी -(संस्कृत) नीतिकाव्य।

(ii) छत्रपति साम्राज्यम्-(संस्कृत) नाटक-प्रकाशन 1929

(iii) प्रतापविजय-(संस्कृत) नाटक- 1926 रचनाकाल।

(iv) संयोगिता स्वयम्बर-(संस्कृत)-नाटक-1927 रचनाकाल।

(v) सप्तर्षिदृष्टवेद-सर्वस्वम्-(संस्कृत)।

गुजराती भाषा में श्रीयाज्ञिक ने पाँच ग्रन्थ लिखे थे, जिनमें से 'मेवाड़ प्रतिष्ठा' और 'हर्षदिग्विजय' नाटक के रूप में प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार महाकवि याज्ञिक जी ने गुजराती एवं संस्कृत भाषा में राष्ट्रपरक ग्रन्थों की रचना की। जिस समय इन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना की उस समय देश परतन्त्र था तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन जोरों पर था, जिसका विगुल सन् 1857 में बज चुका था। अतः याज्ञिक जी ने साहित्य के माध्यम से देश के वीर-पुरुषों का चरित्र लिखकर समाज के समक्ष प्रस्तुत किया तथा लोगों में राष्ट्रीय एकता को जगाने का प्रयत्न किया। तात्कालिक स्वतन्त्रता की आकांक्षा तथा हिन्दूराष्ट्र की कल्पना उनकी राष्ट्रीय भावना के प्रतीक हैं, जिन्हें इनके काव्यों में देखा जा सकता है। भारतीय राष्ट्र स्वातन्त्र्यवीर एवं हिन्दुत्व की रक्षा करने वाले महाराणा प्रताप तथा वीर-शिवाजी की यशःगाथा को अपने काव्यों में लिखकर श्रीयाज्ञिक जी ने अपने राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम को प्रकट किया है। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं तथा उत्कृष्ट शिक्षण और उत्कट राष्ट्रप्रेम के कारण ये सदा-सर्वदा सम्मानित भी किये गये थे। काशी की विद्वत् परिषद् ने श्रीयाज्ञिक जी को 'साहित्यमणि' की उपाधि से विभूषित किया तथा तत्कालीन शंकराचार्य के द्वारा ये 'श्रीविद्या' की उपाधि से समलंकृत किये गये थे। संस्कृत के राष्ट्रवादी इस महान् लेखक का 13 नवम्बर सन् 1965 ई. को देहावसान हो गया। आधुनिक संस्कृत साहित्य में श्रीयाज्ञिक का नाम अमर पंक्तियों में सुरक्षित है। आचार्य भर्तृहरि ऐसे महापुरुषों एवं राष्ट्रकवियों के लिए नीतिशतकम् के अपने इस पद्य में इस प्रकार शुभासंशा प्रदान करते हैं-

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।

नास्ति येषां यशः काये जरा-मरणजं भयम्॥

Scanned by CamScanner

14. कवयित्री लीलारावदयाल

आधुनिक कवयित्री लीलारावदयाल संस्कृत की सुप्रसिद्ध लेखिका और कवयित्री पण्डिता क्षमाराव की पुत्री हैं। लीलाराव की शिक्षा-दीक्षा अपनी माता की देख-रेख में संपन्न हुई। इनका विवाह उत्तरप्रदेश के एक सभ्य एवं सुसंस्कृत माथुर परिवार में श्री हरीश्वर दयाल से हुआ है। इनके पति भारतीय वैदेशिक सेवा में कार्यरत रहे हैं। लीलाराव को लेखन की प्रेरणा अपनी माँ से विरासत में मिली है। लेखन के अतिरिक्त टेनिस खेलना इनका पसंदीदा शौक है।

लीलाराव के नाटक आधुनिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। उनमें परम्परावादी नाट्य तथ्य, नान्दी-प्रस्तावना, भरतवाक्यादि का अभाव है। यह तथ्य नूतन नाट्यलेखन शैली का परिचायक है। सम-सामयिक घटनाओं को आधार बनाकर लघु नाटकों का लेखन, अपनी माता की कथात्मक रचनाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करना लीलाराव की विशिष्टता को उपस्थित करता है। प्रायः उनकी समस्त रचनाएँ 'मञ्जूषा' नामक 'संस्कृत पत्रिका में 1955-62 ई. तक प्रकाशित हुई हैं'। लीलाराव ने 18 रूपकों का प्रणयन किया है, जो इस प्रकार हैं-

1. गिरिजायाः प्रतिज्ञा
2. बालविधवा
3. होलिकोत्सव
4. क्षणिक विभ्रम
5. गणेशचतुर्थी
6. असूयिनी
7. मिथ्याग्रहणम्
8. वीरभा
9. कटुविपाकम्
10. तुकारामचरितम्
11. कपोतालयः
12. ज्ञानेश्वरचरितम्
13. वृत्तशंसिच्छत्र
14. मीराचरितम्
15. स्वर्णपुस्कृषिवलाः
16. जयन्तु कुमाउनीयाः
17. तुलाचलाधिरोहणम्
18. मायाजालम्

इन रचनाओं में से 5 रचनाएँ इनकी माँ के द्वारा रचित रचनाओं का नाटकीय रूपान्तरण हैं-

गिरिजायाः प्रतिज्ञा (आख्यायिका) - गिरिजायाः प्रतिज्ञा

मीरालहरी (काव्य) - मीराचरितम्

ग्रामज्योतिः - कटुविपाकम्

तुकारामचरितम् - तुकारामचरितम्

मायाजालम् (कथा) - मायाजालम्

इसके अतिरिक्त 'कपोतालय' प्रहसन जगदीशचन्द्र माथुर रचित कथा का रूपकांतरण है। इस प्रकार लीलारावदयाल ने आधुनिक संस्कृत-साहित्य में अपना बहुमूल्य अवदान प्रदान किया है।

Scanned by CamScanner